ईश्वरभक्ति को समझना

1 तिमोथी 2:10 – “बल्कि वह, जो ईश्वरभक्ति का दावा करती हैं, अच्छे कर्मों के साथ।”

ग्रीक में “ईश्वरभक्ति” शब्द eusebeia है, जिसका अर्थ है ईश्वर के प्रति सम्मान या भक्ति। यह केवल बाहरी धार्मिक दिखावा नहीं है, बल्कि एक जीवन शैली है जो हमारे हृदय की भक्ति को दर्शाती है। ईश्वरभक्ति का मतलब है ऐसा जीवन जीना जो विचार, कर्म और व्यवहार में ईश्वर की महिमा करता हो।

जैसे “खाना” शब्द खाने की क्रिया से आया है, वैसे ही ईश्वरभक्ति ईश्वर का भय मानने की क्रिया से उत्पन्न होती है — उनका सम्मान करते हुए और उनकी इच्छा के अनुसार जीवन जीना।

1 तिमोथी 2:9–10 का संदर्भ

पॉल टिमोथी को चर्च में आचार-व्यवहार के संबंध में लिखते हैं, विशेष रूप से महिलाओं के व्यवहार और आभूषणों के बारे में:

1 तिमोथी 2:9–10 – “वैसे ही, महिलाएँ भी विनम्र वस्त्र पहनें, संयम और सम्मान के साथ, न कि जटिल बाल, सोना, मोती या महंगे वस्त्र पहनें, बल्कि वह, जो ईश्वरभक्ति का दावा करती हैं, अच्छे कर्मों के साथ।”

पॉल सुंदरता या वस्त्रों की निंदा नहीं कर रहे, बल्कि हृदय-केंद्रित विनम्रता की बात कर रहे हैं। जो महिलाएँ ईश्वर की पूजा करती हैं, उन्हें अपने भीतर की सुंदरता — नम्रता, आत्म-नियंत्रण और अच्छे कर्म — को बाहरी सजावट पर प्राथमिकता देनी चाहिए।

विनम्रता और पवित्रता

विनम्रता का आह्वान केवल वस्त्रों के लिए नहीं है, बल्कि यह पहचान और गवाही के लिए है। एक ईश्वरभक्त महिला जानती है कि उसका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है:

1 कुरिन्थियों 6:19–20 – “क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर उस पवित्र आत्मा का मंदिर है जो तुम्हारे भीतर है, जिसे तुम्हें ईश्वर ने दिया है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि

तुम्हें कीमत चुकाकर खरीदा गया, इसलिए अपने शरीर और आत्मा
में ईश्वर की महिमा करो।”

इसका मतलब है कि हमारी स्वतंत्रता स्वयं को खुश करने के लिए नहीं, बल्कि हमें जिसने हमें मोक्ष दिया है, उसे सम्मान देने के लिए है। वस्त्र, श्रृंगार और व्यवहार में विकल्प इसी सम्मान को दर्शाने चाहिए।

सांस्कृतिक अनुरूपता का खतरा

आज की दुनिया में फैशन और सुंदरता के मानक अक्सर बाइबिलीय मूल्यों के विपरीत होते हैं। संस्कृति आत्म-अभिव्यक्ति और भौतिक सजावट को बढ़ावा देती है, जबकि शास्त्र चेतावनी देता है:

रोमियों 12:2 – “और इस संसार के अनुरूप न बनो, बल्कि अपने मन
के नवीनीकरण से रूपांतरित हो जाओ, ताकि तुम यह प्रमाण कर सको
कि ईश्वर की क्या अच्छी, स्वीकार्य और पूर्ण इच्छा है।”

जब महिलाएँ (या पुरुष) केवल दिखावे के लिए ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करते हैं, तो यह मसीह से ध्यान भटका देता है।

उद्धार का सच्चा प्रमाण

चर्च में भाग लेना या सेवा करना स्वतः सच्चे विश्वास का प्रमाण नहीं है। यीशु ने चेतावनी दी कि केवल बाहरी कार्य बिना आंतरिक परिवर्तन के अर्थहीन हैं:

मत्ती 7:21 – “हर कोई जो मुझसे कहता है, ‘प्रभु, प्रभु,’
स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, बल्कि जो मेरे पिता
की इच्छा करता है।”

ईश्वरभक्ति आज्ञाकारिता और पवित्रता से पहचानी जाती है, न कि केवल प्रदर्शन या दिखावे से।

पश्चाताप और नए जीवन का आह्वान

यदि आपको एहसास हो कि आपका जीवन ईश्वरभक्ति को नहीं दर्शाता, तो यह अनुग्रह का क्षण है — मसीह की ओर लौटने का निमंत्रण। सच्चा उद्धार हमारे हर पहलू को बदल देता है: हमारे विचार, कर्म और आचरण।

2 कुरिन्थियों 5:17 – “इसलिए, यदि कोई मसीह में है, वह नई सृष्टि है; पुरानी चीज़ें चली गईं; देखो, सब कुछ नया हो गया।”

पश्चाताप करो, सुसमाचार में विश्वास करो, बपतिस्मा लो (प्रेरितों 2:38), और पवित्र आत्मा को अपने जीवन को नवीनीकृत करने दो। आपका बाहरी जीवन आंतरिक परिवर्तन का साक्ष्य बने।

मरानाथा — प्रभु आ रहे हैं!
हमें पवित्र, विनम्र और ईश्वरभक्त पाया जाए जब वह लौटेंगे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp